13

॥ॐ॥

होम्योपैथी चिकित्सा

1. जो गाय सिर से या सींग से मारती हैं-

   दवा Nux-Vomica-200

   5 बूंद दिन में एक बार 5 दिन दें। आदत छूट जायेगी।

2. जो गाय पैर से लात मारती है-

   दवा Laehesis-1000

   5 बूंद पहले दिन व 15 दिन बाद दूसरी खुराक दें। लाभ होगा।

3. जिस गाय का बछड़ा-बछड़ी मर जाये गाय दूध देना बंद करदें, उसे Ignatia-200 5 बूँद दिन में एक बार 5 दिन दें।

4. जिस गाय के थनों में खून आता हो- उसे Ipeacac-200

   5 बूंद दिन में एक बार 5 दिन दें लाभ होगा ।

5. जिस गाय की गर्भाशय बाहर आता हो उसको नीम के पानी से धो दें फिर फुलाई हुई फिटकड़ी के पानी में कपड़ा भिगोकर लपेट दें। खाने में Sepia-200 की 5 बूंद दिन में एक बार पांच दिन दें।

6. जिस गाय का थन सूज जाये, छूने न दे उसे Belladona-200 दिन में एक बार 5 बूंद पांच दिन दें।

7. जिस गाय को कांच, कांटा, कील, कीड़ा डंक मार दें उसे Ledum Pel-36 (लेडमपाल) की 5 बूंद आधा-आधा घंटे में तीन बार दें।

8. जिस गाय को मुंह पका-खुरपका हो जाय उसके खुर को नीम के उबले पानी से धो दें। फिर पेट्रोल में रुई भिगोकर पैर के घाव पर रख दें कीड़े बाहर निकलेंगे उन्हें दूर फेंकदे फिर हल्दी व गोमूत्र का लेप बनाकर घाव पर लगा दें।

9. मुँह में कांटे हो गये है, मुँह से लार गीरती है । मोटा नमक पीसकर रगड़ दें तुरन्त लाभ होगा एवं Marc-sol (मर्कसील-200) की 5 बूंद पांच दिन मुंह में डालें लाभ होगा । पशु को अलग बांधे।

Scanned by CamScanner

॥ॐ॥

गो चिकित्सा

गायों की चिकित्सा देशी पद्धति से आयुर्वेद या होम्योपैथी दवा से करनी चाहिये, एलोपैथी चिकित्सा महंगी व अधूरी है । इसलिये पुराने समय में जिन वस्तुओं से चिकित्सा होती थी उन वस्तुओं को व उन चिकित्सकों को ढूढ़कर उनके ज्ञान को संग्रह कर सुरक्षित करना चाहिये ।

- पेट में कृमि
- गायों का शरीर बाहर आना
- आफरा
- जेर नहीं गिरने पर
- गर्मी में न आना
- जूं, किलनी, चींचड़
- थनैला रोग
- मुँह पका - खुर पका
- बच्चा होने में कठिनाई
- गर्भ न ठहरना

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
1.	मुँहपका (छाले खुरपका)	मुँह व पैर में छाले चलने में परेशानी, खुरों में घाव	बोरेक्स 200 मर्कसॉल - 200 केलेन्डुला - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
2.	रतौंधी	दिखने में परेशानी	यूफ्रेशिया 200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
3.	आँखें आना	पानी आना, लाल होना जलना	यूफ्रेशिया 200 बेलाडोना 200 पल्सेटिला 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
4.	पेशाब में खून आना	पेशाब में जलन, गरम व खून आना	फेरमफास 200 हेमामेलिस 200 केन्थेरिस 200 फास्फोरस 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
5.	फूलगोभी की तरह मस्से (Wart)	शरीर पर मस्से होना	थुजा 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार

Scanned by CamScanner

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार				
क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
6.	अन्य प्रकार के मस्से	शरीर पर मस्से होना बच्चे जनने के बाद	डलकामारा-200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
7.	जड़ निकलना Prolaps and Uterus बच्चेदानी का बाहर निकलना	पेशाब की जगह से जड़ निकलना, ब्यावने पशुओं के बैठ जाने पर होता है	सिपीया 200 पोडोफाइलम 200 रूटा - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
8.	गलघोंटू	गले में सूजन बुखार	यूपेटोरियम पर्फ 200 आयोडिनम 200 कालीबाइक्रोम 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
9.	अफारा	पेट में गैस भरना, पेट फूलना, कब्ज टट्टी कड़ी होना	कांबोंवेज 200 कोल्चीकम 200 नक्स वोमिका 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
10.	चोट, घाव इन्ज्यूरी सड़ांध	शरीर पर घाव या चोट लगना व पस बन जाना	केलेन्डुला 200 आर्निका 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
11.	डायरिया (दस्त)	पतले पिचकारी के समान दस्त	ऐलोज 200 पोडोफाइलम 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
12.	खूनी दस्त	खून व आँव मिला पतला गोबर	मर्कसाल-200 मर्ककोर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
13.	सर्दी, खाँसी, जुकाम	नाक से पतला पानी बहना व खाँसना	एलियमसिपा-200 ब्रायोनिया-200 एन्टिमटार्ट-200 आर्स आयोड-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
14.	जलना	आग से जलने पर	केनथेरिस-200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार

Scanned by CamScanner

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
15.	पेट दर्द कुम्बड निकालकर चलना	पेट दर्द जानवरों का कराहना	डायसकोरिया विलोसा-200 मेगफास - 200 कोलोसिन्थ - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
16.	मोंच	माँसपेशियें में खिंचाव लंगड़ापन, हड्डी में चोट फ्रैक्चर (हड्डी टूटना)	रसटाक्स-200 आर्निका-200 हायपेरिकम-200 रूटा-200 सिम्फायटम-200 कल्केरिया फास-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
17.	दमा / खाँसी	श्वास का तेज चलना	ब्लेटा ओरिन्यनटेलिस-200 इपिकाक - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
18.	उल्टी	मुँह से बार-बार पानी गिरना	इपिकाक-30	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
19.	गांठे (मंद)-ट्यूमर	शरीर पर गांठ होना	केलकेरिया फ्लोर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
20.	काँटा, या सुई लगना	शरीर पर सूजन हो जाना	लिडमपाल-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
21.	खुजली होना	चर्म रोग	इचिनेशिया-200 सल्फर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
22.	मूत्र रोग	बार-बार पेशाब करना	कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
23.	ब्याने के बाद (डिलीवरी होने के पश्चात्)	बार-बार पेशाब करना	आर्निका - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
24.	गोबर में कीड़े (वर्म) कीड़े		सीना - 200	

Scanned by CamScanner

स्वाभाविक उपलब्ध देशी साधनों से -

(1) **आफरा-** (क) नारियल की रस्सी में छोटी-छोटी गांठे पास-पास लगाकर मुँह के अन्दर डालकर दोनों जबड़ों के बीच बाँध दें, इससे वह बार-बार मुँह चलायेगी और उसकी गैस बाहर आ जायेगी।

(ख) उसे दो तीन ग्राम शुद्ध हींग घोलकर पिला दें। इससे उसकी गैस निकल जायेगी।

(ग) 100 ग्राम तारपीन का तेल, 500 ग्राम तिल के तेल में मिलाकर बांस की नाल से पिला दें इसमें 25 ग्राम काला नमक भी मिला दें। यह भी आफरा दूर करने में सहायक होगा।

(2) **थनैला रोग -** यह रोग गाय के बांधने का स्थान ज्यादा कठोर होने पर हो जाता है। अतः बाँधने की जगह (फर्श) मुलायम रहे।

रोग होने पर थन से दूध आना बन्द हो जाता है, थन में दूध जमकर गादी पत्थर जैसी हो जाती है, इसके लिये शीशम वृक्ष के कोमल पत्तों की चटनी बनाकर थन के ऊपर गादी पर लेप कर दें ऐसा 5-6 दिन करें इससे गादी नरम हो जायेगी, तब नीम के पत्ते उबालकर ठंडाकर उस पानी की थन के अन्दर सिरींज की सूई हटाकर पिचकारी दे दें - बाद में दूध जमीन पर निचोड़ दें- ऐसा करने से थन वापिस ठीक हो जायेगा।

(3) **जेर नहीं गिरने पर -** गाय ब्याने के बाद कई बार, 2-3 घंटे तक जेर नहीं गिरती

(क) इसे निकालने के लिये **बांस** के पत्ते खिलाने से लाभ होगा है।

(ख) चुहारा-खारक की गुठली **आधी** फोड़कर गुड़ में लपेट कर खिलादें थोड़ी देर में जेर बाहर आ जायेगी।

(4) **गाय का ताव (हीट) में न आना -** (क) चुहारा 4 (गुठली निकालकर) 8 दिन तक रोज खिलायें गाय हीट में आ जायेगी।

(5) **गाय ताव में आती है पर ठहरती नहीं-** गर्भधारण नहीं करती- तब ½ चम्मच सूंघने वाली तम्बाकु का चूर्ण सिरींज में भरकर (गाय के ताव (हीट) में आने पर) योनी में अन्दर स्प्रे कर दें आद में गर्भाधान करायें गर्भ ठहर जायेगा।

Scanned by CamScanner

(6) प्लास्टिक खाई हुई गायों की चिकित्सा - सरसो का तेल 100 ग्राम, तिल का तेल 100 ग्राम, नीम का तेल 100 ग्राम, अरण्डी का तेल 100 ग्राम, देशी गाय की ताजा छाछ (मठ्ठा) 500 ग्राम, 50 ग्राम फिटकड़ी (Alum), 50 ग्राम पिसा हुआ सेंधा नमक, 25 ग्राम पिसी हुई लाल राई (सरसों नहीं) इन सबको घोलकर इतनी सामग्री सुबह सायं तीन दिन तक नित्य पिलानी है और तीन दिन हरा चारा ही खिलाना है, सूखा चारा बिल्कुल नहीं- बाद में सामान्य चारा खिलायें- इससे पेट में हलचल मचेगी, प्लास्टिक अपना स्थान छोड़ेगा, जुगाली में मुँह में आयेगा, गाय उसे बाहर गिरायेगी ऐसा महिने भर तक करेगी इससे 30-40 किलो प्लास्टिक बाहर आयेगा, गाय ठीक हो जायेगी। ऐसी गाय को बाँध कर नहीं रखना चाहिए । दवा देते समय तीन दिन भी लम्बे रस्से से बाँधे ताकि वह घूम सके ।

(7) कच्चा पपीता (पपैया) तीन किलो, सुबह सायं गाय को खिलाये इससे प्लास्टिक गल कर बाहर निकल जायेगा, कुछ दिन करें ।

गोमाता के द्वारा-

रोगमुक्त, कर्जमुक्त, प्रदूषणमुक्त, अपराध मुक्त, कुपोषण मुक्त, अन्नयुक्त, उर्जायुक्त, रोजगार युक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं और इसके द्वारा कुछ ही वर्षों में स्वावलम्बी सुखी, सम्पन्न भारत बन सकता है। इसलिए हर परिस्थिति में देश में गोवंश का पालन, संवर्धन एवं संरक्षण करना प्रत्येक भारतवासी का दायित्व हैं।

●●●

Scanned by CamScanner

॥ॐ॥

सृष्टि की संरक्षक भारतीय गाय

-: संकलन कर्त्ता :-

शंकर लाल

अ.भा. गो सेवा प्रमुख

कर्णावती (अहमदाबाद) गुजरात

09414337444, 09429893360

E-mail : shankarlalgauseva@gmail.com

Scanned by CamScanner

प्रकाशक :-

गो-सेवा विभाग (रा.स्व.संघ)

जयपुर (राजस्थान)

मुद्रक :-

अमित प्रिन्टर्स

576 काशीनाथ जी की गली,
गोपाल जी का रास्ता, चौड़ा रास्ता
जयपुर (राज.)
मो. 9828157872

प्रथम संस्करण- गुरु पूर्णिमा 2012, सम्वत् 2069
एकादश संस्करण- प्रतिपदा 2016, सम्वत् 2073

सहयोग राशि
25/-

Scanned by CamScanner